12 भावना

अनित्य

- राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
- मरना सबको एक दिन, अपनी-अपनी बार ॥

अशरण

- दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
- मरती बिरियाँ जीव को, कोऊ न राखन हार

संसार

- दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान।
- कहूँ न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान॥

एकत्व

- आप अकेला अवतरे, मरै अकेला होय।
- यो कबहूँ इस जीव को, साथी सगा न कोय॥

अन्यत्व

- जहाँ देह अपनी नहीं,तहाँ न अपना कोय।
- घर सम्पत्ति पर प्रगट ये, पर हैं परिजन लोय।।

अशुचि

- दिपै चाम-चादरमढ़ी, हाड़ पींजरा देह।
- भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह॥

आस्त्रव

- मोह नींद के जोर, जगवासी घूमें सदा।
- कर्म चोर चहुँ ओर, सरवस लूटैं सुध नहीं।।

संवर

- सत्गुरु देय जगाय, मोहनींद जब उपशमैं।
- तब कछु बनहिं उपाय, कर्म चोर आवत रुकैं॥
- ज्ञान-दीप तप-तेल भर, घर शोधै भ्रम छोर।
- या विधि बिन निकसैं नहीं, पैठे पूरबचोर॥

निर्जरा

- पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच परकार।
- प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥

लोक

- चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
- तामें जीव अनादितैं,भरमत हैं बिन ज्ञान॥

बोधिदुर्लभ

- धन कन कंचन राजसुख,सबहि सुलभकर जान।
- दुर्लभ है संसार में, एक जथारथ ज्ञान॥

धर्म

- जाँचे सुर-तरु देय सुख, चिन्तत चिन्ता रैन।
- बिन जाँचे बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन॥